BAIJU BAWRA
A.N.D. college
DATE – 02.07.2020

B.Ed – II year
Course – 10
Unit – 02
Topic – Concept of Special Education

Concept of Special Education

विशिष्ट शिक्षा, शिक्षाशास्त्र की वह शाखा है जिसमें विशिष्ट बालकों के लिए किस प्रकार का शैक्षिक वातावरण बनाया जाय। जिससे उन्हें समुचित शिक्षा देकर समाज की मुख्यधारा के साथ जोड़ा जा सके। क्योंकि सामान्य कक्षा के बालकों के साथ सामंजस्य करना कठिन कार्य है। समय समय पर विशेष निरीक्षण की आवश्यकता पड़ती है। इसलिए विशिष्ट बालकों को सामान्य कक्षा के बाद अतिरिक्त समय देना होता है।

स्कीनर के अनुसार –
विशिष्ट शिक्षा विशिष्ट बालकों के शैक्षिक व्यवहार का अध्ययन करता है।

क्रो एवं क्रो – विशिष्ट शिक्षा मनोविज्ञान, व्यक्ति के जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक सीखने के अनुभवों की व्याख्या करता है।

स्किनर – विशिष्ट शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षा मनोविज्ञान की वह शाखा है, जो विशिष्ट बालकों के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के अनुप्रयोग का प्रतिनिधित्व करता है।

लायड एम डन ने विशेष शिक्षा को परिभाषित करते हुए कहा है कि विशिष्ट शिक्षा के लिए निम्न चार प्रमुख प्रावधान होने आवश्यक हैं।

1. विशिष्ट रूप से प्रशिक्षित शिक्षाविद्
2. विशिष्ट पाठ्य सामग्री
3. विशिष्ट क्रिया विधि
4. विशिष्ट उपदेश सामग्री

सामान्य शिक्षा से विशिष्ट शिक्षा के पूर्ण पृथक्कीकरण को लेकर विद्वानों में काफी मतभेद रहा है किन्तु विशिष्ट शिक्षा के आयोजन पर भी बल दिया गया।

विशिष्ट शिक्षा के लिए निम्न परिस्थितियाँ जिम्मेदार हैं

1. सामान्य कक्षा के बालकों के साथ उन्हें शिक्षित करना, समय समय पर विशेषज्ञ निरीक्षण करके बालकों की सहायता करना
2. सामान्य कक्षा के उपरांत अध्यापकों को अपना समय विशिष्ट बालकों को देना।
3. विशिष्ट बालक अधिक से अधिक समय विशिष्ट प्राध्यापकों के साथ रहें तथा कुछ समय सामान्य छात्रों के साथ रहें
4. बालक को पूर्णतः विशेष कक्षा में रहना आदि।

अर्थात् विविध प्रकार की विशेष शिक्षा बालकों की आवश्यकता तथा आवश्यकता के अनुरूप ही होनी चाहिए, किन्तु यदि बालक सामान्य कक्षा से समायोजित हो सकता है तो उसे वहीं रखना चाहिए जिससे उनका अधिक से अधिक विकास हो सके। अपवादी बालकों की विशिष्ट समस्याओं तथा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जिस प्रकार की विशिष्ट कक्षा तथा अध्यापकों की आवश्यकता होती है; उसे विशिष्ट शिक्षा कहा जाता है

धन्यवाद